



बिहार गजट

असाधारण अंक

बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

12 वैशाख 1939 (श0)

(सं0 पटना 358) पटना, मंगलवार, 2 मई 2017

जल संसाधन विभाग

अधिसूचना

21 मार्च 2017

सं0 22 नि0 सि0 (दर0)—16-03/2013/426—श्री चन्द्रिका तिवारी (आई0डी0-2258), तत्कालीन कार्यपालक अभियंता, बाढ़ नियंत्रण प्रमण्डल, दरभंगा द्वारा दरभंगा शहरी सुरक्षा तटबंध योजना के तहत कराये गये बाढ़ नियंत्रण कार्य में बरती गई कतिपय अनियमितता की जाँच तकनीकी परीक्षक कोषांग, निगरानी विभाग द्वारा की गयी। निगरानी विभाग द्वारा समर्पित जाँच प्रतिवेदन के समीक्षोपरान्त विभागीय पत्रांक 564 दिनांक 16.05.14 द्वारा श्री तिवारी से स्पष्टीकरण किया गया। श्री तिवारी द्वारा समर्पित स्पष्टीकरण की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गई। सम्यक समीक्षोपरान्त श्री तिवारी के विरुद्ध आरोप पत्र प्रपत्र 'क' गठित करते हुए बिहार पेंशन नियमावली के नियम-43 (बी0) के तहत विभागीय कार्यवाही संचालित करने का निर्णय लिया गया।

उक्त निर्णय के आलोक में विभागीय संकल्प सह-पठित ज्ञापांक 1017 दिनांक 06.05.15 द्वारा श्री तिवारी के विरुद्ध बिहार पेंशन नियमावली के नियम-43 (बी0) के तहत विभागीय कार्यवाही संचालित की गई।

आरोप वर्ष:- “वर्ष 2010-11 में एकरारनामा के 10 प्रतिशत संख्या एवं राशि के अनुसार विपत्र की जाँच नहीं करने से लोक निर्माण लेखा संहिता के कंडिका 231 के परिशिष्ट-6 का उल्लंघन”। विभागीय कार्यवाही में संचालन पदाधिकारी द्वारा समर्पित जाँच प्रतिवेदन में श्री तिवारी के विरुद्ध प्रतिवेदित आरोप को अप्रमाणित पाया गया। संचालन पदाधिकारी द्वारा समर्पित जाँच प्रतिवेदन की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गई। सम्यक समीक्षोपरान्त संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमति के निम्न बिन्दु पर श्री तिवारी से द्वितीय कारण पृच्छा किये जाने का निर्णय लिया गया।

असहमति के बिन्दु (1)- नियमानुसार कराये गये कार्यों की मापी कनीय अभियंता द्वारा लेते हुए मापी मापीपुस्त में दर्ज की जाती है तथा विपत्र तैयार किया जाता है। तत्पश्चात सहायक अभियंता द्वारा मापपुस्त में कनीय अभियंता द्वारा अंकित मापी के जाँचोपरान्त हस्ताक्षर करते हुए मापपुस्त तथा विपत्र प्रमण्डलीय कार्यालय में प्रेषित किया जाता है। उसके बाद मापपुस्त में मापी की जाँच लोक निर्माण लेखा संहिता के कंडिका-231 के परिशिष्ट-6 के अनुसार कार्यपालक अभियंता को करना होता है। तत्पश्चात मापपुस्त में अंकित मापी की गणना की जाँच प्रमण्डल स्तर पर प्रमण्डलीय लेखा लिपिक एवं लेखापाल द्वारा करने के बाद ही विपत्र पारित करने हेतु कार्यपालक अभियंता को मापपुस्त एवं विपत्र उपस्थापित की जाती है। ऐसी स्थिति में श्री तिवारी का कहना कि उनके द्वारा ही मापी जाँचोपरान्त ब्लू स्याही से मापपुस्त में टिक किया गया, स्वीकार योग्य नहीं माना जा सकता है, क्योंकि संभव है कि मापी जाँच करने के दौरान सहायक अभियंता द्वारा मापपुस्त में टिक किया गया हो अथवा यह भी संभव है कि प्रमण्डलीय स्तर पर

विपत्र पारित करने के दौरान मापी की गणना की जाँच के दौरान लेखा लिपिक/लेखा पदाधिकारी द्वारा ही मापपुस्त पर टिक किया गया हो।

असहमति के बिन्दु (2)— लोक निर्माण लेखा संहिता के कंडिका-231 के परिशिष्ट-06 के कंडिका-(4) के अनुसार “पड़ताली गई अलग-अलग मद में मापपुस्त में साफ-साफ दिखाई जाय और संबंध पदाधिकारी पड़ताल की तारीख को ही तारीख सहित अपने हस्ताक्षर अंकित कर पड़ताल का परिणाम लिख डाले”। उक्त से स्पष्ट है कि पदाधिकारी द्वारा जाँच की तिथि को ही तिथि सहित हस्ताक्षर करना है। परन्तु मापपुस्त के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि श्री तिवारी द्वारा मापपुस्त में अंकित मापी पर कहीं भी जाँचोपरान्त हस्ताक्षर नहीं किया गया। मात्र विपत्र पारित करते हुए ‘पेमेंट ऑफ मेन्को’ पर हस्ताक्षर किया गया। अतः श्री तिवारी का कथन कि इनके द्वारा मापी की जाँच की गई, स्वीकार योग्य नहीं माना जा सकता।

अतः उपरोक्त असहमति के बिन्दु के आलोक में विभागीय पत्रांक 710 दिनांक 27.04.16 द्वारा श्री तिवारी से द्वितीय कारण पृच्छा किया गया। द्वितीय कारण पृच्छा का जवाब श्री तिवारी द्वारा समर्पित किया गया। जिसमें श्री तिवारी द्वारा अंकित किया गया कि:-

(i) मेरे द्वारा मापी जाँच ब्लू स्याही से किया गया।

(ii) परिशिष्ट 39/14 में अवर प्रमण्डल पदाधिकारी द्वारा जहाँ जाँच किया गया है वहाँ घेरकर उनके द्वारा टिक एवं चेक लिखा गया है। इस परिशिष्ट की अन्य मापी जो टिक किये हुए हैं उसे जाँच के दौरान ब्लू स्याही से मेरे द्वारा टिक किये गये हैं।

(iii) परिशिष्ट 33A/10, 33A/8 एवं 33A/7 की मापी की जाँच अवर प्रमण्डल पदाधिकारी द्वारा जो की गयी है उसमें से कुछ जगहों पर उनके द्वारा टिक एवं चेक लिखा गया है तथा कुछ पर केवल चेक लिखा गया है। इन्हीं में से जाँच के दौरान जहाँ पर टिक इनके द्वारा नहीं किया गया, उसे ब्लू स्याही से टिककर मापी की जाँच मेरे द्वारा की गई है।

श्री तिवारी द्वारा समर्पित द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गई। सम्यक समीक्षोपरान्त पाया गया कि श्री तिवारी ने अपने द्वितीय कारण पृच्छा उत्तर में स्पष्ट किया है कि मापी जाँच के दौरान नीली स्याही से टिक किया गया है। अवर प्रमण्डल पदाधिकारी द्वारा जहाँ जाँच किया गया है वहाँ घेरकर उनके द्वारा टिक एवं चेक लिखा गया है। अन्य मापी जो टिक किए गए हैं उसे जाँच के दौरान नीली स्याही से उनके द्वारा टिक किया गया है। अवर प्रमण्डल पदाधिकारी द्वारा जाँचित प्रविष्टि को ही नीली स्याही से उनके टिक किये जाने का उल्लेख इनके द्वितीय कारण पृच्छा में किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि इनके द्वारा मापीपुस्त की जाँच लोक निर्माण लेखा संहिता की कंडिका 231 के परिशिष्ट की कंडिका (4) के प्रावधानों के अनुसार नहीं की गई। इसलिए श्री तिवारी का द्वितीय कारण पृच्छा उत्तर स्वीकार योग्य नहीं माना जा सकता है।

यद्यपि इस पूरे मामले में सरकार को हुई किसी प्रकार के वित्तीय क्षति का उल्लेख नहीं है किन्तु श्री तिवारी अपने प्रति कार्यों के निर्वहन में उदासीन बने रहें। न्यूनतम 10 (दस) प्रतिशत मापी की प्रविष्टि एवं विपत्र की जाँच इनके द्वारा की जानी थी परन्तु इनके द्वारा ऐसा नहीं किया गया जो इनके पदीय कार्यों में चूक का द्योतक है। उक्त प्रमाणित आरोप के लिए श्री तिवारी के विरुद्ध “पेंशन से 5 (पाँच) प्रतिशत की कटौती 2 वर्ष के लिए” का दण्ड अधिरोपित करने का निर्णय सरकार द्वारा लिया गया।

सरकार के उक्त निर्णय के आलोक में श्री चन्द्रिका तिवारी, तत्कालीन कार्यपालक अभियंता, बाढ़ नियंत्रण प्रमण्डल, दरभंगा सम्प्रति सेवानिवृत्त को निम्न दण्ड दिया एवं संसूचित किया जाता है:-

“पेंशन से 5 (पाँच) प्रतिशत की कटौती 2 वर्ष के लिए”।

सरकार के निर्णय में बिहार लोक सेवा आयोग की सहमति प्राप्त है।

बिहार-राज्यपाल के आदेश से,
जीउत सिंह,
सरकार के उप-सचिव।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,

बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

बिहार गजट (असाधारण) 358-571+10-डी0टी0पी0।

Website: <http://egazette.bih.nic.in>